Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- VII ISSUE- I JANUARY 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

भारत में सकल घरेलू उत्पाद वृध्दि दर एवं बेरोजगारी दर के वर्तमान संबंध का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. आर. एच. नगरकर
सहयोगी प्राध्यापक
जी. एस. कालेज ऑफ कॉमर्स ॲण्ड
इकॉनामिक्स, नागपूर.

सारांश :—

आर्थिक वृध्दि का सबसे अहम संकेतांक है — सकल घरेलु उत्पाद (GDP), प्रत्येक देश जीडीपी दर में वृद्धि करना चाहती है, भारत भी इसी होड़ में है। देश को विश्व का सबसे युवा देश कहा जाता है, किंतू देश में बढती बेरोजगारी दर बहूत चिंता का विषय है, जीडीपी वृध्दि दर और बेरोजगारी दर में विपरीत अथवा समान संबंध हो सकता है। विपरीत संबंध है तो क्या यह आनुपातिक है? आवश्यकता है जीडीपी वृध्दि दर अधिक हो किंतु बेरोजगारी दर कम हो। यही स्थिती आदर्श होगी। सरकारी और गैरसरकारी स्तरों पर यही नीति और गंभीर प्रयासों की अपेक्षा है ।

***मूल शब्द :—** आर्थिक वृध्दि, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) दर, बेरोजगारी दर, विपरीत संबंध, रोजगार निर्माण, सरकारी नीति.*

प्रस्तावना :—

वर्तमान में प्रत्येक राष्ट्र की सफलता का अधार उस राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की स्थिती है। आर्थिक वृध्दि के लिए हर देश की सरकार प्रयासरत रहती है। भारत भी आर्थिक वृद्धि की होड़ और दौड़ में सम्मिलित है। भारत की आर्थिक वृध्दि का सबसे अहम संकेतांक है— जीडीपी (GDP), सकल घरेलू उत्पाद, नितदिन घरेलू उत्पाद में हो रही वृध्दि अथवा कमी की चर्चा सरकारी स्तर, राजनैतिक स्तर और मिडिया के द्वारा पर सुनी जा सकती है। अब जीडीपी ही देश की और सरकार की सफलता का मापदंड बन गया है। वर्ष २०१७ में योजना आयोग के तत्कालिन उपाध्यक्ष श्री मोंटेकसिंह अहलूवालिया का मानना था की अर्थव्यवस्था में जीडीपी वृध्दि दर ८ प्रतिशत होना आवश्यक है। ऐसा ही अब नवंबर २०१९ में वर्तमान वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन के दोहराया है की देश में जीडीपी की दर ८ प्रतिशत होना चाहिए तभी हम प्रगति पथ पर चल सकेंगे। दूसरी और भारत में बेरोजगारी सबसे विकराल समस्या है। अनेक सरकारे बनी और गयी, पर बेरोजगारी अर्थव्यवस्था के दूर्धर रोग के रुप में दिखायी दी है। राजनैतिक दलों का यह एक लोकप्रिय मूद्दा है जिसका उपयोग चूनावों में युवाओं को लुभाने के लिए किया जाता है। वर्तमान समय मे देश में बरोजगारी की दर में निरंतर वृध्दि गहन चिंता उपस्थित करती है। दूनिया मे सबसे ज्यादा युवा जनसंख्या भारत में है। १५ से २९ वर्ष के बीच ३५ करोड से अधिक युवा है। जो की भारत की कुल जनसंख्या के २७ प्रतिशत है। देखने पर यह युवा शक्ति वरदान है। किंतू विश्व श्रम संगठन के महानिदेशक गाय राईडर का मानना है की यदि भारत प्रति वर्ष १ करोड नए लोगों को रोजगार नही दे पाया तो यही युवा आबादी ‘टाईम बम’ में बदल सकती है। जहा अर्थव्यवस्था के आर्थिक वृध्दि का संकेत जीडीपी है, वही बरोजगारी अर्थव्यवस्था के अपयश का सूचक है।

अध्ययन का उद्देश :—

१)आर्थिक वृध्दि के संकेतांक सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) दर का अवलोकन करना ।

२)बेरोजगारी दर का अवलोकन करना ।

३)जीडीपी वृध्दि दर और बेरोजगारी दर के संबंध का अध्ययन करना ।

संशोधन का प्रकार :—

प्रस्तूत संशोधन पत्र का प्रकार वर्णनात्मक है ।

परिकल्पना :—

जीडीपी वृध्दि दर और बेरोजगार दर में विपरीत आनुपातिक संबंध है ।

तथ्य संकलन के स्त्रोत :—

प्रस्तुत अध्ययन के लिए द्वितियक स्त्रोंतो से तथ्य एवं जानकारी प्राप्त की गई है। पुस्तके, इंटरनेट, विभिन्न पत्रिकाओं, समाचार पत्रो से सरकारी व गैरसरकारी प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया गया है ।

सीमाएँ :—

प्रस्तुत अध्ययन में आर्थिक वृध्दि के केवल एक संकेतांक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का अध्ययन किया गया है। जीडीपी दर और बेरोजगारी दर का सबंध का विवेचन करने के लिए इन दोनों के ऑकडो का अवलोकन किया गया है। इन दोनो दरों के आंकडे केवल ५ वर्षो के है। जो भारत से संबंधित है ।

सकल घरेलू उत्पाद और बेरोजगारी

भारत का केन्द्रीय सांख्यिकीय कार्यालय एनएसएसओ देश के सकल घरेलू उत्पाद और बेरोजगारी दर की गणना करता है ।

जीडीपी गणना की आय आधारित और व्यय आधारित दो पध्दतियॉ है। जीडीपी गणना का एक सूत्र इस प्रकार है। जी. डी.पी. = निजी उपभोग + कुल निवेश + सरकारी निवेश + सरकारी व्यय + (निर्यात — आयात)

तिसरा तरीका उत्पादन के आधार पर :

भारत में जीडीपी मापने के लिए उत्पादन को आधार बनाकर गणना की जाती है। इसके तहत जीडीपी के लिए विशिष्ट सीमा के भीतर पैदा होने वाले समस्त उत्पादों के मूल्य को जोड देते है। इसके तहत मैन्युँक्चरिंग और सर्व्हिस सेक्टर की केवल वे गतिविधीयॉ ही उत्पाद में शामिल होती है, जिनका आर्थिक महत्व हो। जैसे कोई किसान १०० किलोग्रॅम गेहूं का उत्पादन करता हो और उसमें से ८० किलोग्राम गेहूं बेचता हो, तथा २० किलोग्राम अपने परिवार के लिए रख लेता है, तो केवल ८० किलोग्राम गेहूं को ही जीडीपी में शामिल किया जाएगा। इसी तरह सेवा को भी जीडीपी में केवल तभी जोडा जाता है, जिसका उससे कोई आर्थिक हित पैदा हो रहा हो ।

जब व्यक्ति सक्षम हो और काम करना चाहता हो किंतू उसे काम उपलब्ध न हो तो उसे बेरोजगार कहते है। इस स्थिति को बेरोजगारी कहते है। बेरोजगारी के मापन को बेरोजगारी दर कहते है।

बेरोजगारी दर गणना का एक सूत्र इस प्रकार है ।

$$\text{बेरोजगारी दर} = \frac{\text{बेरोजगारों की संख्या}}{\text{कुल श्रम शक्ति}} \times १००$$

श्रम शक्ति बेरोजगारों और नौकरीपेशा / कार्यरत व्यक्तियों का योग है ।

विकसनशील देश में बेरोजगारी में कमी लाना एवं आर्थिक वृध्दि में वृध्दि करना प्राथमिकताएँ होती है। आर्थिक वृध्दि का महत्वपूर्ण मापदंड जीडीपी है। जिसमें राष्ट्रीय उत्पादन, राष्ट्रीय आय एवं राष्ट्रीय व्ययों की वृध्दि सम्मिलित है। इन सब में वृध्दि के कारण देश नागरिकों की आय और जीवनस्तर पर अनूकूल प्रभाव पडता है। जीडीपी बढने से सामाजिक कल्याण में वृध्दि होती है, चिकित्सा – स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृध्दि की जा सकती है। रोजगार के नवसृजन से ही बेरोजगारी कम की जा सकती है ।

देश की अर्थव्यवस्था की सफलता के लिए आर्थिक वृध्दि और रोजगार समष्टि अर्थशस्त्र के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण चर है। इनका समयोचित अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

विश्लेषण :–

आर्थिक वृध्दि और बेरोजगारी में संबंध :–

- रोजगार निर्माण और आर्थिक वृध्दि के संबंध का अध्ययन जरुरी है ।
- आर्थिक वृध्दि दर की धीमा गति के कारण बेरोजगारी दर बढती है। हालांकि ऐसा होगा ये जरुरी नही है ।
- जब ऋणात्मक आर्थिक वृध्दि हो तब निश्चित तौर पर बेरोजगारी बढती है। कारण :–

मॉग में कमी होने के कारण फर्मो का उत्पादन कम हो जाता है जिससे रोजगार के स्तर में कमी होगी। मंदी में भी रोजगार पर नकारात्मक परिणाम होता है। विगत कुछ वर्षो का अध्ययन किए जाने पर यह भी देखा गया है की आर्थिक वृध्दि दर के उंचे रहने पर भी बेरोजगारी दर अधिक रही। आर्थिक वृध्दि उँची रहने पर उद्योंगों में आधूनिकतम तकनीकों का प्रयोग होने लगता, पूंजी निवेश अधिक होता है, जिससे उत्पादन भी बढता है। लेकिन पूंजी व तकनीक आधारित इन उद्योंगों में उसी गति से रोजगार निर्माण नही होते। उत्पादन की मात्रा बढती है किंतू श्रमिकों की संख्या नही। फिक्की के पूर्व अध्यक्ष श्री वाई के. मोदी ने वर्ष २०१६ में कहा था – ''पूंजी को अधिक महत्व देने के कारण रोजगार निर्माण कम हुआ है ।''

यह भी परिलक्षित हुआ है की जीडीपी दर अधिक था तब भी बेरोजगारी दर अधिक था। जीडीपी दर कम हुआ, कम ही होता गया और बेरोजगारी दर अधिक ही रहा। जिससे एक विचार के अनुसार आर्थिक वृध्दि और बेरोजगारी में अस्पष्ट संबध है ।

Outlook for the GDP

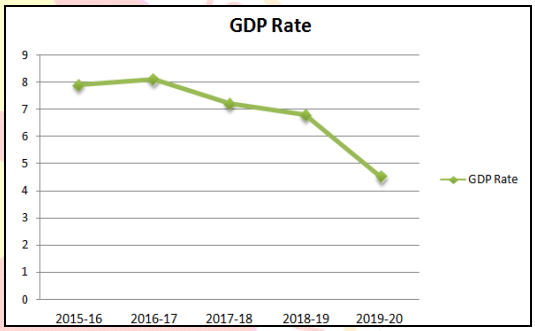

Outlook for the Unemployment Rate

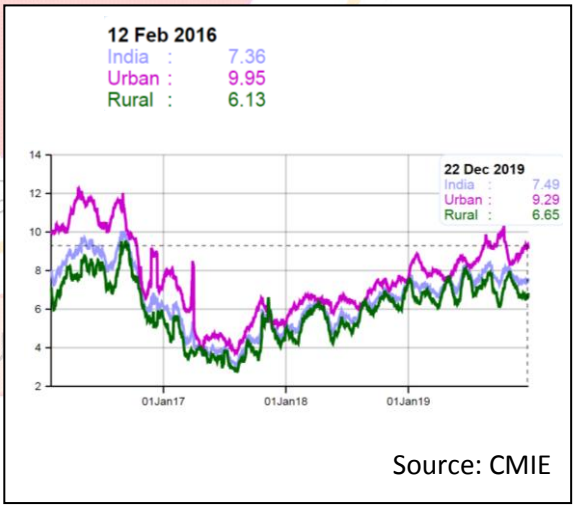

निरिक्षण :–

१) वर्ष २०१५–२०१६ में जीडीपी दर ८ प्रतिशत से थोडी कम है और देश में बेरोजगारी दर कर २०१६ में ७.३६ है ।

२) वर्ष २०१६–२०१७ में जीडीपी दर थोडीसी बढकर ८ प्रतिशत हुयी और बेरोजगारी दर ६ से थोडा अधिक है ।

३) वर्ष २०१७–१८ में जीडीपी कम होकर ७ प्रतिशत है। वही बेरोजगारी दर ५ प्रतिशत के आसपास है ।

४) वर्ष २०१८–२०१९ में जीडीपी दर ६.८ प्रतिशत है और बेरोजगारी दर बढकर ७.८ हुयी है ।

५) वर्ष २०१९–२०२० जीडीपी दर में गिरावट होकर ४.५ प्रतिशत हुयी है। जब की बेरोजगारी दर ७.५ के लगभग ही है ।

उपरोक्त निरिक्षण से विदीत होता है की आर्थिक वृध्दि का एक संकेतांक जीडीपी का दर और बेरोजगारी दर में विपरित संबंध है। किंतू यह विपरित संबंध समान अनुपात में नही है। इसीलिए इस संबंध को विपरित तो कहा जायेगा। किंतू यह विपरित संबंध / स्थिती का अनुपात समान नही होता ।

अत: जीडीपी वृद्धि दर तथा बेरोजगारी दर में विपरीत आनुपातिक संबंध है, यह परिकल्पना गलत सिद्ध हुयी है।

निष्कर्ष :–

आर्थिक वृध्दि का दर जिस गति से बढता है उस गति से बेरोजगारी दर में कमी नही होती। आवश्यकता है की देश की जीडीपी की दर बढे और इसका सकारात्मक प्रभाव रोजगार निर्माण पर पडे, इससे ही बेरोजगारी दर कम होगी। किंतू वर्तमान समय में भारत में ऐसी परिस्थितियॉ बनते हुए नही दिखायी दे रही है। देश का बडा युवा वर्ग रोजगार की तलाश में घुम रहा है, ऐसे में सरकारी नीति एवं उद्योग जगत का नजरिया अधिकाधिक रोजगार पैदा करना होना चाहिए। देश में आर्थिक वृध्दि हो, विकास हो साथ–साथ बडे पैमाने पर रोजगार भी हो, ऐसी स्थिति की सबको प्रतिक्षा भी है और तीव्र अपेक्षा भी।

संदर्भ सूची :–

1) https://data.worldbank.org/indicator/NY.GDP.MKTP.KD.ZG
2) Indian Economy by Shankar Ganesh (Book), Kalyani Publications
3) *Indian Economy* by *P.K.Dhar* (Book)
4) https://unemploymentinindia.cmie.com/
5) https://www.thehindu.com/business/Economy/india-unemployment-rate-3-year-high-cmie-data/article29855098.ece
6) https://www.business-standard.com/article/current-affairs/india-s-oct-unemployment-rate-rises-to-8-5-highest-in-over-3-years-cmie-119110100315_1.html
7) http://www.economicsdiscussion.net/essays/unemployment-essays/essay-on-unemployment-in-india/17631
8) https://economictimes.indiatimes.com/jobs/indias-unemployment-rate-hit-6-1-in-2017-18/articleshow/69598640.cms
9) Employment and Unemployment in India by E T Mathew(Book), Sage Publication, 2006
१०) इंडिया टूडे मासिक पत्रिका, लिविंग अंक मीडिया इंडिया लि. नई दिल्ली, १६ मई २०१८
११) श्री मोटेक अहलूवालिया के भारतीय अर्थव्यवस्था पर दृष्टि, वर्ष २०१८
१२) दै. नवभारत, श्री गाय रायडर के विचार, दिनांक ०९.०७.२०१६
१३) दै. लोकमत समाचार, श्री ललित गर्ग, दिनांक २१.०४.२०१९
१४) दै. लोकमत समाचार, श्री विश्वनाथ सचदेव, दिनांक २०.०३.२०१९